KUMARI THIYAM SURYAMUKHI DEVI

Kumari Thiyam Suryamukhi Devi is a famous Manipuri classical dancer.

2. Born on 8th December, 1935, Kumari Suryamukhi Devi started her career as a child stage artiste of theatre and started learning Manipuri dance from Guru Maisnam Amubi Singh. She also learnt from other gurus like Yambem Mahavir Singh, Haobam Atomba Singh, Amudon Sharma, Kh. Lokeshwar, A. Yaimgbi Singh, Th. Babu Singh etc. She worked and trained with contemporary choreographers - notably Shri Apunikarta, Shri Prabhat Ganguli and Shri Narendra Sharma. She received training in Chhau dance of Mayurbhanj from Shri Krishnachandra Naik.

3. Kumari Suryamukhi Devi presented classical solo dance in 1952 at the occasion of All India Music and Dance Conference sponsored by the Bharatiya Kala Kendra, Delhi and many more performances in Calcutta, Allahabad etc. In 1954, as a member of the Manipuri troupe of the Indian Cultural Delegation, she visited U.S.S.R., Czechoslovakia, Tashkent, Uzbek, Poland, Sweden, Switzerland etc. During the visit, she performed Manipuri dance at the iconic Bolsoi Theatre and got the golden chance of witnessing the legendary "Swan Lake" ballet - a timeless classic. As a member of Indian Cultural Delegation, she visited Peking, Shangai in 1955 and China, Vietnam, Malaysia, Philippines, Hong Kong in 1956. She joined the Little Ballet Troupe, Andheri, Bombay in 1957, and visited France, United Kingdom, South America, Tunisia, Holland, Scotland, Morocco etc. The Sangeet Natak Akademi organised Tagore Centenary Celebrations in 1961, in which she presented the Manipuri dance-drama "Chitrangada" under the able guidance of Guru Amubi Singh at Talkatora Camp at Delhi. In 1967 she performed Dasa Avatar in dance drama 'Khandita' at the Geet Govinda Celebrations organised by Sangeet Natak Akademi, New Delhi.

4. In 1968 as a member the Little Ballet Troupe, Gwalior, Kumari Suryamukhi Devi participated in cultural programmes at Mexico Olympic and toured U.S.A. Japan, Thailand, Indonesia. She joined 'Ballet Unit' of Jawaharlal Nehru Manipuri Dance Akademi as the Senior Production Assistant and played many important roles and worked as an assistant choreographer. One of the ballets 'Keibul Lamjao' participated in 5th London International Festival of Theatre and bagged five merit awards. Its film version,"Sangai - Dancing deer of Manipur" is also very famous and bagged many awards. She also participated in the Seoul International Folk Lorie Festival (Asiad 1986). She had given many solo dance performances like, Abhimanyu, Dasa Avataar, Krishna Biraha, Sakhi Ukti, Basak Sajika Nila Kamala at different Classical Manipuri Solo Dance Festivals organised by Manipur State Kala Akademi.

5. Kumari Suryamukhi Devi established Research Centre for Manipuri Performing Arts in 1984 and imparts training to young artistes in the field of classical Manipuri solo dance. She composed many solo items - Basanta Varnan, Sakhi Ukti, Yasoda, Dooti Sambad . She trained many students who came from different parts of the country and stayed at her residence for a month under Guru-Sishya Parampara system and gave lecture-cum-demonstration as requested by the SPIC-MACAY to be the Guru since 1986.

6. Kumari Suryamukhi Devi is the recipient of numerous awards and honors. The Sangeet Natak Akademi, New Delhi, conferred her Akademi Award' in 2003. The Manipur State Kala Akademi has given her 'Akademi Award' in 1985. The Manipur Sahitya Parishad honoured her as 'Nritya Ratna'(Classical) in 2015. She was honoured with 'Guru Tarunkumar Sanman' in 2009 and many more accolades by the local institutions and organisations.

कुमारी थियाम सूर्यमुखी देवी

कुमारी थियाम सूर्यमुखी देवी एक प्रसिद्ध मणिपुरी शास्त्रीय नृत्यांगना हैं।

2. 8 दिसंबर, 1935 को जन्मी, कुमारी सूर्यमुखी देवी ने अपना करियर एक बाल रंगमंच कलाकार के रूप में शुरू किया और गुरु मैसनम अमुबी सिंह से मणिपुरी नृत्य सीखना शुरू किया। उन्होंने अन्य गुरुओं जैसे यम्बेम महावीर सिंह, हाओबम अतोम्बा सिंह, अमुडन शर्मा, ठा. लोकेश्वर, ए. यिमगबी सिंह, ठा. बाबू सिंह आदि से भी सीखा। उन्होंने समकालीन कोरियोग्राफरों – विशेष रूप से श्री अपुनिकार्ता, श्री प्रभात गांगुली और श्री नरेंद्र शर्मा के साथ काम किया और प्रशिक्षण लिया। उन्होंने श्री कृष्णचंद्र नाइक से मयूरभंज के छऊ नृत्य का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

3. कुमारी सूर्यमुखी देवी ने वर्ष 1952 में भारतीय कला केंद्र, दिल्ली द्वारा प्रायोजित अखिल भारतीय संगीत और नृत्य सम्मेलन के अवसर पर शास्त्रीय एकल नृत्य प्रस्तुत किया और कलकत्ता, इलाहाबाद आदि में कई और प्रदर्शन किए। वर्ष 1954 में, भारतीय सांस्कृतिक प्रतिनिधिमंडल की मणिपुरी मंडली के सदस्य के रूप में, उन्होंने यूएसएसआर, चेकोस्लोवाकिया, ताशकंद, उज्बेक, पोलैंड, स्वीडन, स्विट्जरलैंड आदि का दौरा किया। यात्रा के दौरान उन्होंने प्रतिष्ठित बोलसोई थिएटर में मणिपुरी नृत्य का प्रदर्शन किया और उन्हें प्रसिद्ध कालातीत क्लासिक "स्वान लेक" बैले को देखने का सुनहरा मौका मिला। भारतीय सांस्कृतिक प्रतिनिधिमंडल के सदस्य के रूप में उन्होंने वर्ष 1955 में पेकिंग, शंघाई और वर्ष 1956 में चीन, वियतनाम, मलेशिया, फिलीपींस, हांगकांग का दौरा किया। वह वर्ष 1957 में लिटिल बैले मंडली, अंधेरी, बॉम्बे में शामिल हुईं और फ्रांस, यूनाइटेड किंगडम, दक्षिण अमेरिका, ट्यूनीशिया, हॉलैंड, स्कॉटलैंड, मोरक्को आदि का दौरा किया। वर्ष 1961 में संगीत नाटक अकादमी द्वारा आयोजित टैगोर शताब्दी समारोह में उन्होंने दिल्ली के तालकटोरा शिविर में गुरु अमुबी सिंह के कुशल मार्गदर्शन में मणिपुरी नृत्य–नाटक "चित्रांगदा" प्रस्तुत किया। वर्ष 1967 में उन्होंने संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली द्वारा आयोजित गीत गोविंदा समारोह में नृत्य नाटक 'खंडिता' में दस अवतार का प्रदर्शन किया।

4. वर्ष 1968 में लिटिल बैले ट्रूप, ग्वालियर के सदस्य के रूप में, कुमारी सूर्यमुखी देवी ने मैक्सिको ओलंपिक में सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लिया और अमेरिका, जापान, थाईलैंड, इंडोनेशिया का दौरा किया। वह जवाहरलाल नेहरू मणिपुरी नृत्य अकादमी की 'बैले यूनिट' में वरिष्ठ प्रोडक्शन सहायक के रूप में शामिल हुई और कई महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाईं और सहायक कोरियोग्राफर के रूप में काम किया। 'केइबुल लामजाओ' बैले ने 5वें लंदन अंतर्राष्ट्रीय नाट्य महोत्सव में भाग लिया और पांच मेरिट पुरस्कार जीते। इसका फिल्म संस्करण, "संगाई – मणिपुर का नाचता हुआ हिरण" भी बहुत प्रसिद्ध है और इसे कई पुरस्कार मिले। उन्होंने सियोल अंतर्राष्ट्रीय लोक लोरी महोत्सव (एशियाड 1986) में भी भाग लिया था। उन्होंने मणिपुर राज्य कला अकादमी द्वारा आयोजित विभिन्न शास्त्रीय मणिपुरी एकल नृत्य समारोहों में अभिमन्यु, दसा अवतार, कृष्ण बिरह, सखी उक्ती, बसाक सजीका नील कमल जैसे कई एकल नृत्य प्रदर्शन दिए थे।

5. कुमारी सूर्यमुखी देवी ने वर्ष 1984 में मणिपुरी प्रदर्शन कला अनुसंधान केंद्र की स्थापना की और शास्त्रीय मणिपुरी एकल नृत्य के क्षेत्र में युवा कलाकारों को प्रशिक्षण प्रदान करती हैं। उन्होंने कई एकल कृतियों– बसंत वर्णन, सखी उक्ति, यशोदा, दूती संबाद की रचना की। उन्होंने देश के विभिन्न हिस्सों से आए और गुरु–शिष्य परम्परा व्यवस्था के तहत उनके निवास पर एक माह तक ठहरने वाले कई छात्रों को प्रशिक्षित किया तथा SPIC-MACAY द्वारा वर्ष 1986 से गुरु बनने के अनुरोध पर व्याख्यान–सह–प्रदर्शन दिया।

6. कुमारी सूर्यमुखी देवी को कई पुरस्कारों और सम्मानों से सम्मानित किया गया है। संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली ने उन्हें वर्ष 2003 में 'अकादमी पुरस्कार' प्रदान किया। मणिपुर राज्य कला अकादमी ने उन्हें वर्ष 1985 में 'अकादमी पुरस्कार' दिया। मणिपुर साहित्य परिषद ने उन्हें वर्ष 2015 में 'नृत्य रत्न' (शास्त्रीय) के रूप में सम्मानित किया। वर्ष 2009 में 'गुरु तरुणकुमार सम्मान' के साथ–साथ स्थानीय संस्थानों एवं संगठनों द्वारा उन्हें कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।